राजकुमार भाटिया

राष्ट्रीय

छात्र-शक्ति

वर्ष-2 अंक-3, दिल्ली मई 1987

इस अंक में

1 साथ रहने पर विवाद
2 डिग्री चाहिए चाहे
3 पतलून, टेलीविजन और हमारी सांस्कृतिक दुविधा
5 लेकिन कब तक
7 Leadership traits of Personality
11 What Education meant to Linclon
12 Another variety of Fascism

राष्ट्रीय छात्र शक्ति
सम्पादक :
संजय सत्यार्थी
सम्पादकीय सहकर्मी
राकेश सिन्हा, संजय चौधरी
प्रकाशन कार्यालय :
अ० भा० विद्यार्थी परिषद्
16/3676, रैगरपुरा,
हरध्यान सिंह मार्ग
करोल बाग, नई दिल्ली-5
दूरभाष : 5728215

साथ रहने पर विवाद

अरावली की पहाड़ियों पर बिखरी नंगी चट्टानों के बीच पश्चिमी स्थापत्य के अनुसार बना और बसा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (ज० ने० वि०) शुरू से ही विवादों का केन्द्र रहा है। अपनी छोटी-सी आयु में ज० ने० वि० ने बाहर और भीतर कितने ही विवाद पैदा किए। ताजा विवाद है—साथ रहने का। हां, एक छात्रावास (झेलम छात्रावास) के दो अलग-अलग खंडों में छात्र और छात्राएं रहती हैं। भोजन और मनोरंजन कक्ष (Common Room) साथ-साथ हैं। बाकी सब अलग। निकास भी बिल्कुल अलग। एक खंड के अंतेवासियों को दूसरे खंड में जाने की इजाजत नहीं है। यह व्यवस्था कई वर्षों से लागू थी। अब अधिकारियों ने इस व्यवस्था को खत्म करने का फैसला किया है। छात्र और छात्राओं को एक हॉस्टल में साथ रहने देना उन्हें गैरवाजिब जान पड़ा है। जारी किए गए सूचनापत्र में लिखा था—प्रशासकीय मजबूरीवश उक्त व्यवस्था लागू हुई थी। अब वे कारण नहीं रहे। बाद में अतिरिक्त स्पष्टीकरण दिया गया कि अभिभावकों को यह व्यवस्था नापसन्द थी, इसलिए अलग करने का फैसला हुआ। जैसाकि अमूमन होता आया है और अपेक्षित था—छात्रसंघ ने इस पर आपत्ति की। (क) छात्रों से सीधे जुड़ा सवाल होने के बावजूद छात्रसंघ की राय न ली गई। (ख) बाहरी दबाव में आकर एक तरह से अधिकारियों ने अपने विद्यार्थियों के चरित्र पर अंगुली उठाने वालों की धारणा को पुष्ट किया है। (ग) सन् तिरासी के बाद से विद्यार्थियों को कक्षा, कोर्स और (अब) लिंग के आधार पर बांटने की कोशिश के तहत यह निर्णय किया गया है। एक स्वर से छात्र समुदाय ने अधिकारियों का फैसला मानने से इंकार कर दिया है। धरना, जुलूस, भूख-हड़ताल, सामूहिक उपवास, कक्षा-बहिष्कार, आम-सभा आदि के माध्यम से छात्रों ने अपना विरोध प्रकट किया है। बीच में परीक्षाओं के कारण वातावरण में थोड़ी नरमी आई थी, लेकिन फैसला लागू होने (करने) की तिथि जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, तनाव बढ़ रहा है।

डिग्री चाहिए चाहे.....

परीक्षा में कदाचार रोकने की जुर्रत करने वाले शिक्षकों की फजीहत तो इस देश के लिए नई बात नहीं है। आए दिन किसी न किसी विश्वविद्यालय/महाविद्यालय में कुलपति/प्राचार्य का अपमान, मारपीट और कभी-कभी हत्या होने की घटनाएं होती ही रही हैं। लेकिन देश की राजधानी में एक प्रतिष्ठित और ख्याति प्राप्त विश्व-विद्यालय में ऐसी घटना शायद पहली बार हुई है। दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामलाल कॉलिज (सांध्य) के प्राचार्य प्रो० पी० एन० गुप्ता पर ५ मई को प्राणघातक हमला हुआ। कॉलिज गेट के बाहर की झाड़ियों में ड्यूटी से लौटते श्री गुप्त को अपराधी-छात्रों ने चाकुओं से गोंद डाला। श्री गुप्त का अपराध सिर्फ इतना था कि उसी दिन उन्होंने एक छात्र को परीक्षा में कदाचार करने से रोका था। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक श्री गुप्त एक हस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में मौत से संघर्ष कर रहे थे। महत्वपूर्ण मुद्दा यह नहीं है कि श्री गुप्त का क्या होगा? उनके इलाज का खर्च कौन उठाएगा? या फिर अपराधियों को दंड मिलेगा अथवा नहीं? महत्व की बात तो यह है कि पूरी घटना एक खास प्रवृत्ति को रेखांकित करती है। जिस समय प्राचार्य की उस लड़के के साथ बहस हो रही थी, वहां उपस्थित छात्रों की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है—सर! आप एक लड़के के कारण हम सबको डिस्टर्ब क्यों कर रहे हैं।' या फिर वहां उपस्थित पुलिस की निष्क्रियता भी दर्ज करने वाली बात है।

दुर्घटनाओं के इस देश में कल यह बात भी पुरानी पड़ जाएगी। रह जाएंगी सिर्फ वे आदतें जो समाज की शह पर युवा पीढ़ी में पैठ रही हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद् में परीक्षा में नकल कराए जाने का मामला उठा है। श्रीराम कॉलिज आफ कामर्स, लेडी श्रीराम कॉलिज और विवि विधि केन्द्र (दो) पर सामूहिक नकल का मामला प्रकाश में आया। तीनों ही स्थानों पर किसी शिक्षक या कर्मचारी के नजदीकी रिस्तेदार को ध्यान में रखकर सामूहिक नकल की छूट दी गई। लेडी श्रीराम की तो स्वयं प्राचार्या पर ऐसा आरोप लगा है।

कुलपति ने इन दोनों घटनाओं की जांच के आदेश दिए हैं।

× × ×

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् दिल्ली प्रदेश की कार्यकारी परिषद् की बैठक में प्रस्ताव पारित कर श्याम लाल महाविद्यालय के प्राचार्य पी० एन० गुप्ता पर गुण्डा तत्वों द्वारा हुए कातिलाने हमले की निन्दा की गई।

प्रस्ताव में मांग की गई कि ऐसे गुण्डा तत्वों को जल्द से जल्द पकड़कर कठोर सजा देनी चाहिए। तथा पुलिस के ढुलमुल रवैये की भर्त्सना की। प्रस्ताव में प्राचार्य द्वारा परीक्षा भवन में नकल न करने देने जैसे कठोर निर्णय की प्रशंसा करते हुए उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ तथा दीर्घायु की कामना की गई।

लेख

पतलून, टेलीविजन और हमारी सांस्कृतिक दुविधा

संजय सत्यार्थी

हाल में अपने मित्र के साथ उनके पिताजी के लिए एक अच्छी धोती खरीदने हम दिल्ली के एक प्रतिष्ठित बाजार में गए थे। कपड़े की कम-से-कम पन्द्रह बड़ी दुकानों में पूछने के बाद एक ने बताया कि बाजार के पिछले भाग में एक गोदामनुमा जगह पर हमें धोती मिल सकेगी। जहां उस दुकान का पुराना माल पड़ा है। उसी बाजार की पचासों दुकानों के 'शो केस' पतलूनों के नमूनों से अँटे पड़े थे। मैं अनुमान लगा सकता हूं कि इस सरल और सर्वज्ञात तथ्य को पढ़कर लोगों के मन में परस्पर विपरीत प्रतिक्रियाएं होंगी। इन्हें दर्ज किया जाए और फिर आज से प्रतिक्रियाएं ली जाए। परिणाम में कोई खास हेरफेर नहीं होगा। लेकिन एक खास तब्दीली दिखाई देगी। लोगों ने दूसरी बार अपनी टिप्पणियों में फेर-बदल (सिर्फ शाब्दिक नहीं) किए हैं। कई बार तो बिल्कुल विरोधी बयान सामने आएंगे। ऐसा क्यों? विरोधाभास क्यों ?? दुविधा क्यों ???

देश की राजधानी के एक बड़े बाजार में धोती की अप्राप्यता का संकेत हमें समझना चाहिए। नौ गज लम्बी सफेद धोती में पूरी भारतीय संस्कृति का भविष्य बाँधकर देखना, किसी गंभीर गुरुतर बात का अतिसरलीकरण करना होगा। फिर भी क्या इससे हमारी सांस्कृतिक सोच और इच्छा की दशा और दिशा की जानकारी नहीं मिलती ?

दूसरा उदाहरण लें। शुरू से ही अपने देश का 'पढ़ा-लिखा और समझदार समझा जाने वाला तबका' टी.वी. और वीडियो का आलोचक रहा है। गोष्ठियों में, अख-बारी लेखों में, सार्वजनिक मंचों से बराबर इनके खिलाफ बोलता रहा है। इसके बावजूद 'टी.वी. और वीडियो' का प्रचलन बढ़ा। बल्कि देखा तो यह गया कि सार्वजनिक तौर पर आलोचना करने वाले 'समझदार लोग' भी शाम फिरते ही इस तथाकथित—पागल पिटारा या बुद्धू बक्सा (Idiot Box) के आगे सहज-प्रफुल्लित मन से बैठ जाते हैं। 'रुकावट के लिए खेद है'—का बोर्ड लगते ही दूरदर्शन कर्मचारियों की मानो शामत आ जाती है। बौखलाहट-भरी हजारों चिट्ठियां पहुंचती हैं। हाल में दूरदर्शन पर प्रसारित 'देर रात की फिल्मों' के प्रति भी हमारा 'समझदार रुख' ऐसा ही रहा। क्यों ? दोहरा-पन क्यों ? दुविधाग्रस्त मनःस्थिति के पीछे कौन-से कारण है ?

इस क्यों का उत्तर वर्तमान में ढूंढ़ने पर शायद सभी झूठे और बेईमान नजर आएंगे। सही प्रश्न का यह गलत और अनर्थकारी उत्तर होगा। दरअसल यह दुविधा एक दिन की देन नहीं है। सच तो यह है कि आजादी के तुरन्त बाद से ही हम संशयग्रस्त रहे, विभाजित मानसि-कता को ढोया। (इसका मतलब यह नहीं कि हमें आजाद होने का अधिकार नहीं था, या आजादी नहीं मिलनी चाहिए थी)। सरसरी तौर पर इसके लिए जिम्मेवार घटनाओं पर एक नजर डालने से तस्वीर थोड़ी साफ हो सकेगी।

हमारा देश कृषिप्रधान रहा है। खेती से जीवन की जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ एक खास प्रकार की लोक-संस्कृति अपने यहां विकसित हुई। मिट्टी से जुड़े होने के कारण एक खास प्रकार की स्वायत्तता और सहजता हमारे पूर्वजों को मिली। बेशक आज जैसी 'निजी अमीरी' न रही हो लेकिन प्राकृतिक संपदाओं के सहज और सामू-हिक उपभोग के कारण सामाजिक तनाव कम थे। मुग-लिया शासन के अंतिम चरण में सामंतशाही दबदबा बढ़ जाने के कारण सामान्य जनता पर आर्थिक बोझ बढ़ने लगा। छोटे-छोटे सामंतों (जिनकी संख्या लगातार बढ़ती ही गई) के निर्वाह का खर्च और उनकी उच्छृंखलताओं

के कारण सामान्य जन की उन्मुक्तता और स्वायत्तता बाधित हुई। जन-सामान्य अंतर्मुखी होकर कुल परिवार तक सिमटने लगा। लोक-संबंधों में तनाव आया, सांस्कृतिक कुंठा बढ़ी। लोक-संस्कृति का दायरा सिमटकर कुल-संस्कृति या वंश संस्कृति में तब्दील हो गया। उसमें भी सिर्फ 'निबाह देने का भाव' रह गया। देश की एकात्म संस्कृति की नींव कमजोर हुई, चटक गई।

इसी बीच अंग्रेजी राज की शुरुआत हुई। आर्थिक बोझ और बढ़ा। ईसाई मिशनरियों का शहरी क्षेत्र में फैलाव और सुदूर इलाकों में प्रवेश हुआ। चर्च, स्कूल, अस्पताल और क्लब की चौतरफा घेरेबन्दी में कुछ धर्मांतरण भी हुए। 'मुक्ति के मसीही सुसमाचार' के साथ-साथ मिशनरियों ने 'अशिक्षित, रोगग्रस्त और सांस्कृतिक रूप से कुंठित' जनमानस को अपने रीति-रिवाज, खान-पान, वेश-भूषा से भी परिचित कराया। जिन लोगों ने धर्म नहीं बदले उन्हें भी पश्चिमी रहन-सहन और संस्कृति को जानने-देखने का अवसर (समझने का नहीं) मिला। धनाढ्य और सामर्थ्यवान परिवारों के लड़के विदेश जाकर डिग्रियाँ बटोर लाए; नौकरशाही में शामिल हुए। इनकी सोच में आया बदलाव आने वाले दिनों में संभावित सांस्कृतिक तब्दीली का संकेत था। हालांकि इन्हीं में से कुछ नौजवान पश्चिमी देशों में अपने देश के प्रति मजाकिया टिप्पणियों से क्षुब्ध और गुलामी के अहसास से आहत होकर स्वदेश लौटे। आजादी की लड़ाई में शिरकत की। आजादी की लड़ाई का तेवर और मूल रंग तो राजनीतिक रहा, फिर भी इसने देश की सांस्कृतिक चेतना को झकझोर दिया। लोगों को परम्परा और संस्कृति का गौरव-बोध हुआ। किन्तु राजनीति की तुलना में सांस्कृतिक उत्थान का आग्रह उतना प्रबल न हो सका। इस विषय पर ध्यान देने वालों की तुलनात्मक संख्या और शक्ति जरूरत से काफी कम थी। दूसरे महायुद्ध के बाद उदारवाद (Liberalism), वैज्ञानिक समझ (Scientific Temper), बुद्धिवाद (Rationalism), धर्म-निरपेक्षता (Secularism), समाजवाद (Socialism), आधुनिकता (Modernism), व्यक्तिगत स्वतन्त्रता (Individual Liberty), जैसे आकर्षक पश्चिमी मुहावरों के घटाटोप में 'स्व-संस्कृति का क्षीण आग्रह' दबकर रह गया।'

आजादी के बाद नेहरूजी का व्यक्तित्व आश्चर्यजनक तरीके से देश पर आरोपित हो गया। डिस्कवरी ऑफ इण्डिया (Discovery of India) के लेखक और आयातीत तकनालॉजी के भरोसे औद्योगीकरण करने का स्वप्न देखने वाले व्यक्ति की दुविधा समूची पीढ़ी की दुविधा बन गई। दूसरी तरफ राजनैतिक नेतृत्व के चारित्रिक गिरावट और अकुशलता के कारण देश में परिवर्तन और नवीनीकरण के जितने प्रयोग किये जाने चाहिए वे नहीं हुए। जो हुए भी, अधिकांश असफल रहे, अधूरे रहे। नेताओं में लोगों की आस्था तो उठ ही गई स्वयं पर का विश्वास कमजोर पड़ा, टूट गया। विभाजन का दुष्प्रभाव पड़ा, सो अलग। आर्थिक मोर्चे पर इसका दबाव पड़ा, सांस्कृतिक मोर्चे पर 'टोटल कंफ्यूजन' प्राप्त हो गया। 'हम क्या थे' इसमें निष्ठा नहीं रही, 'क्या हैं' इसका बोध नहीं रहा, और 'क्या हों' इसमें रुचि नहीं रही। प्रेरणाएं मृतप्राय हो गईं।

ठीक इसी समय, पाँचवें और छठे दशक में अमेरिका के नेतृत्व में समाजवादी व्यावस्थाओं ने भौतिक रूप से जबर्दस्त प्रगति की। वहां चल रहे वैज्ञानिक अनुसंधानों के कई प्रतिफल (कुछ कड़वे-कुछ मीठे) एक के बाद एक सामने आए। तकनालॉजी के मामले में दोनों महाशक्तियों ने 'निर्णायक बढ़त' हासिल की। उत्पादन विस्फोट जैसी स्थिति सामने आई। बाद में अमेरिका के साथ उपग्रह के रूप में जुड़ी अर्थव्यवस्थाओं - यूरोपीय देशों, जापान, कोरिया, ताईवान आदि में ऐसी ही सुख समृद्धि दिखाई देती हैं। तैयार माल को खपाने के लिए विज्ञापन और दूसरे तरीकों से गरीब (कंगाल नहीं) और बड़े देशों के बाजार पर जोरदार आक्रमण हुआ। कानूनी और गैर-कानूनी तरीकों से बड़ी मात्रा में विदेशी वस्तुएं हमारे देश में भी उपलब्ध हुईं। डिग्री और नौकरी के लिए विदेश जाने का जो सिलसिला अंग्रेजी राज के जमाने में शुरु हुआ

(शेष पृष्ठ ६ पर)

लेकिन कब तक.....

—दिनेश पाहुजा

आज अपने समाज में नारी की जो दुर्दशा बनी हुई है उसके लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी स्तर पर सामान्यतः नारी को ही दोषी करार दे दिया जाता है। लेकिन क्या जिन मुद्दों को सामने लाते हुए नारी को दोषी ठहराया जाता है उन मुद्दों के रहते भी हम अपने सगे-सम्बन्धियों को उस नजर से देख पाते हैं ? आज हर स्तर पर नारी सुरक्षा के लिए (भले ही राजनीतिक दृष्टिकोण रखते हुए) प्रयास जारी है। नये-२ सेलों का गठन हो रहा है परन्तु हम इस प्रयास में कितने सफल हुए हैं ?

पिछले दिनों संसद की नाक के तले जहां से नारी-उत्थान के लिए बड़े-२ सुझाव एवं कार्यक्रम दिए जाते हैं —सार्वजनिक और सामूहिक रूप से नारी प्रताड़ना के तीन बड़े काण्ड हो चुके हैं। लेडी श्रीराम तथा लेडी ईरविन महाविद्यालय की छात्राओं से दुर्व्यवहार की घटना के साथ-साथ होली के अवसर पर जीसस एण्ड मेरी महा-विद्यालय की छात्राओं से हुआ दुर्व्यवहार और भी दुखदायी एवं निन्दनीय है। निन्दनीय इसलिए कि इन छात्राओं से दुर्व्यवहार करने वाले कोई और नहीं बल्कि इसी विश्व-विद्यालय के अन्तर्गत सलवान कॉलेज के छात्र थे। दुखदायी इसलिए कि इस घटना से चार दिन पहले ही दिल्ली पुलिस उत्तरी क्षेत्र की उपायुक्त श्रीमती किरण बेदी ने बड़े-२ आश्वासनों के साथ किसी भी अप्रिय घटना से मुकाबला करने की घोषणा करते हुए एक नये अस्थायी सेल (प्रकोष्ठ) का गठन किया था।

१४ मार्च ८७ को जब जएमे. कॉलिज की छात्रायें यू स्पेशल से घर लौट रही थीं तो रास्ते में सलवान कॉलेज से छात्र-गुण्डों का एक दस्ता इस बस में चढ़ आया और छात्राओं के मना करने पर भी होली जैसे पवित्र त्यौहार मनाने के बहाने उनसे अभद्र व्यवहार करने लगा और बाहर खड़े दुकानदार और यात्री तमाशा देखते रहे। कोई भी उन छात्रों को मना करने की हिम्मत न कर सका। बस के ड्राईवर एवं कण्डक्टर ने भी छात्रों के साथ हँसी-खुशी बातचीत की। उसके बाद जब छात्राओं ने पुलिस की शरण लेनी चाही तो पहले तो उन्हें दो घण्टे सेवा पर्यवेक्षक (Duty Officer) के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस बीच उन्हें वहां तैनात जनता की सुरक्षा हेतु पुलिस कर्मियों द्वारा अभद्र व्यवहार, टीका-टिप्पणी एवं डांट का सामना करना पड़ा। जब किसी को हरकत में न आता देख बड़े अफसरों से शिकायत की धमकी दी गयी तो पुलिस वालों ने चार सीधे-सादे एवं बेकसूर लोगों को पकड़ लिया। असन्तुष्ट छात्राओं को अपने आत्म-सम्मान एवं सुरक्षा के लिए सड़कों पर खुले जंग का ऐलान करना पड़ा। इस बीच विद्यार्थी परिषद् दिल्ली प्रदेश का एक प्रतिनिधि मंडल जीजस एण्ड मेरी कॉलेज की छात्राओं से मिला तथा उनसे सहानुभूति जताते हुए उनके आन्दोलन को पूरा समर्थन देने का लिखित आश्वासन भी दिया।

आज कहने को तो कानून की धारा ५०९ के अन्तर्गत अगर आप किसी लड़की को सीटी बजाकर भी छेड़ते हैं तो आपको एक साल की सजा हो सकती है। परन्तु वास्तविकता क्या है ? क्या इन तीनों काण्डों के अभि-युक्तों को सजा हो सकी ? क्या इस सबके लिए कानून-व्यवस्था या सरकार को ही दोषी ठहराना उचित है ?

(पृष्ठ ४ का शेष)

था, उसमें गति आई। सुविधा और विलासिता की जानकारी और सहज उपलब्धता के कारण देशवासियों का झुकाव पश्चिमी वस्तुओं की ओर होना स्वाभाविक था। आयातीत तकनालॉजी के कंधे पर सवार औद्योगिकरण की पूरी प्रक्रिया में 'ऐसी चीजें' एक हद तक आवश्यक भी हो चुकी थी (नैतिक दृष्टि से न सही)। देश का सांस्कृतिक आग्रह पहले से ही कमजोर हो चुका था। अतः विदेशी वस्तुओं के साथ वहां की सोच, वहां की विचारधारा और जीवन-मूल्यों को स्वीकारने में भी कोई विशेष पीड़ा नहीं हुई। 'प्रगतिशील बनाम पोंगापंथी' का विवाद उठाकर उन मुट्ठी-भर लोगों को बेअसर कर दिया गया जो इस मामले में सेलेक्टिव (selective) होने का आग्रह कर रहे थे। अब जब 'कमरे में बेहोश करने वाला रंगीन-सुगंधित धुंआ भर चुका है तो दरवाजे-खिड़कियां बन्द करें कि नहीं' जैसी दुविधा हमारे सामने है।

दरअसल एक खास प्रकार के औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथ 'पतलून' और 'टी.वी.' जुड़े ही होंगे। देर रात की फिल्में' भी इस औद्योगिक प्रक्रिया का अनिवार्य (unavoidable) हिस्सा है। देश और दुनिया के एक समान (एक पथाभिष्ट) औद्योगीकरण के कारण दूरसंचार और जन-संचार माध्यमों का महत्व बढ़ गया है। 'टी.वी. इसका सबसे कारगर औजार माना जाता है। घर बैठे दुनियाभर के समाचार, सुदूर स्थित जगहों की तस्वीर सहित जानकारी, सस्ता मनोरंजन आदि कई सुविधाएं इससे जुड़ी हैं। मशीनों की एकरस आवाज और आफिसों की उबाऊ दिनचर्या से थका-हारा व्यक्ति Instant मनोरंजन चाहेगा। दूरदर्शन के माध्यम से वह एक खास प्रकार की Fantasy में घुलमिल जाता है। फिर इसके लिए अधिक पढ़े-लिखे होने की जरूरत भी नहीं है। इनके अलावा कई और उपयोग (सामाजिक रंग-रोगन में रंगे) भी गिनाए जा सकते हैं, मसलन—शिक्षा और साक्षरता के प्रसार के लिए, स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारियां (खासकर परिवार नियोजन) देने के लिए, खेती और मौसम सम्बन्धी सूचनाएं देने के लिए, व्यापार सम्बन्धी सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए; विशाल भू-भाग में प्रशासकीय पकड़ बहुत मजबूत करने के लिए, आदि-आदि।

दूसरी ओर दूरदर्शन पर सस्ता, छिछला और निष्क्रिय करने वाला मनोरंजन देने, उसी प्रकार की रुचि विकसित करने, पारिवारिक संस्कारों पर चोट पहुँचाने वाले कार्यक्रम और विज्ञापन देने, उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने, सत्ता के हाथ मजबूत करने, व्यक्ति के एकांत अंतरंग जीवन में दखल देने आदि का दोष लगाया जाता है। दोनों ही बातें सच और सही हैं। लेकिन सवाल यहां सिर्फ टी.वी. के गुण-दोषों की विवेचना करने का नहीं है। यह मुद्दा इससे कहीं गहरा और बड़ा है। जिसकी जड़ें वर्तमान में कम, इतिहास में अधिक हैं। टी.वी. और वीडियो एक खास औद्योगिक प्रक्रिया की न तो पहली और न आखिरी चीजें हैं ये। पब्लिक स्कूल, विदेशी गाड़ियां, पतलून, क्रिकेट, आत्महत्या, पारिवारिक बिखराव, नशीली दवाएं, बहुमंजिली इमारतें, ब्लू फिल्में, सुपर कम्प्यूटर, बोकारो का स्टील प्लांट, भाखरा नंगल का बांध सब एक-दूसरे से जुड़े हैं। एक की स्वीकृति दूसरे के लिए जगह बनाती है, जमीन तैयार करती है। अब सवाल पूरब और पश्चिम का भी नहीं रहा है। ऐसा नहीं कि यान्त्रिक तकनालॉजी और औद्योगीकरण की प्रक्रिया में पश्चिमी जन-जीवन यन्त्रणामुक्त रहा है। हमारे सामने भी कोई चारा नहीं है। हमें सिर्फ 'पीछे होने का लाभ' मिल सकता है क्योंकि हम जान सके हैं कि दुष्प्रभाव क्या-क्या है। इससे मानसिक तैयारी भर हो सकती है। खेद-भरी, भावुक टिप्पणियों से इस आंधी को नहीं रोका जा सकता। बाह्य कारणों के दबाव और आन्तरिक आकर्षणों के इस सम्मिलन के प्रभाव क्षेत्र से बेदाग निकल पाना तो असम्भव ही लगता है। पूरे तौर पर सजग रहकर इसे अधिकाधिक अनुकूल बनाकर ग्रहण करना शायद अपेक्षाकृत कम पीड़ादायक रास्ता है। हां, यदि कोई वैकल्पिक विकास प्रक्रिया तैयार कर सके तो और बात है। लेकिन कौन करेगा ? कैसे करेगा ?? कब करेगा ??? दिशाएँ मौन हैं, उत्तर नहीं है।

Leadership Traits of Personality

Leadership is one of the most important criterion in the assessment of personality. And no wonder. As Andre Maurois observes men can usefully undertake and properly accomplish a common task when one of them continually directs the activities of all towards the same end. Every non-directed collective action turns rapidly into confusion and disorder. "Whenever men are required to act together, there must be a chief (leader)....Without leadership, no military action, no national life, no social life is possible". General De Gaulle aptly said "men fundamentally can no more get along without direction than they can without eating drinking or sleeping." The effectiveness of group performance is determined in large part by the leadership structure of the group.

Meaning of Leadership

In psychological terms a leader is "A member of a group (or organisation) who outstandingly influences the activities of the group and who plays a central role in defining group goals and in determining the ideology of the group". Leadership signifies the exercise of authority in a group or organisation the quality or qualities upon which such exercise of authority depends varying with the nature of the group and the circumstances in which leadership is displayed or established.

At the Annual Conference of the Society for Personnel Administration, Washington, May 12, 1954, President Dwight D. Eisenhower defined it thus : "The art of getting someone else to do something you want done because he wants to do it."

Traits of Leadership

The outstanding traits (or qualities) of leadership are as follows :

(1) Self-confidence : Self-confidence is the essential quality of leadership. A psychologist who studied three types of leaders — criminals, army officers, and student leaders— found three traits that were common to all : (*i*) speed of decision; (*ii*) finality of decision, and (*iii*) self-confidence. To inspire confidence one must be self-confident with an unshakable faith in one's ability and a calm yet strong determination to see things through.

(2) Dynamism : The leader must be the dynamo of the group or the organisation. As Casson puts it, "To give orders—that is not enough. The man at the top must give out strength as well —strength and good cheer and optimism. He must be DYNAMIC."

(3) Decision Making : Quickness and finality of decision is another leadership trait. He listens to both sides of an argument before making up his mind about it. He does not allow himself to hesitate or be inconsistent or be influenced by others. He makes up his own mind. His decisions are made on facts not opinions and desires. Before making a decision he informs himself thoroughly and weighs all the circumstances. When he has decided and given his command he sticks to his guns. "Firmness", said Napoleon, "prevails in all things."

(4) Preserverance : A leader has dogged preseverance. He takes on his tasks without becoming upset, without any malice or other

destructive emotions that waste time and tear down patience and resolve.

(5) Knowledge : Knowledge, precise knowledge is also an important factor in leadership. It is evidently essential to plan the route by which the goal is reached. It gives the leader the necessary confidence : "the feeling that he knows what he is talking about".

(6) Determination : Then there is the vital factor of determination. It has three elements : (*i*) The knowledge that the task to be accom plished is humanly possible. (*ii*) Ruthlessness : the effective leader must be ruthless towards the disloyal, the careless and the idle. (*iii*) Magnetism : the leader has to be magnetic a central figure towards whom people are drawn. The true leader is in the forefront and may be seen indeed to be everywhere at once. He is not artificially extrovert, but he would usually rather listen than talk.

(7) Democratic attitudes and ways : The great asset of democratic leadership in which the group decision method is used is that it accomplishes group acceptance of a solution. According to this method the leader conducts the discussion but does not impose his views on the group, invoke his authority or take sides on any issue. Rather, he plays a permissive role, encourages discussion and attempts to get a unanimous decision on action to be taken. Team spirit, an essential factor in every sport, is a vital factor in democratic leadership. A democratic leader is considerate to others; keeps in mind the welfare, the feelings and opinions of others with whom he works. He has earned their confidence and they trust him. Studies of authoritarian and democratic types of leadership suggest that democratic leadership promotes acceptance of the group goals and increases cohesiveness and member satisfaction.

(8) Action : It is an essential trait of leadership. An ideal leader can get things done without creating chaos, distrust and enmity. He knows how to : "suit the action to the word, the word to the action." The determination to do something must be followed by acts not merely words.

(9) Sang-froid : (Composure). He keeps his head when the other fellows are losing theirs.

(10) Non-proneness to passing the buck : The ideal leader is not prone to passing the buck. The desk of a recent President of the U.S.A. was said to be adorned with the notice saying : "The Buck Stops Here". To pass the buck means to shift responsibility to another. The buck can be passed in three directions : (*i*) downwards, (*ii*) sideways and (*iii*) upwards. It is not confined to civil service being endemic to every large organisation. As Andre Maurois has it: "A true leader will always take full responsibility for his action."

(11) Imagination : Imagination is essential for without it, the leader is aimless.

(12) Self-concept : The leader's opinion of himself is an important factor in his ability to lead others. Non-leaders have poorer self-concepts. The leaders self-estimate must come close to the group's opinion of him if he is to lead them effectively.

(13) Social Perception : Social perception—awareness of the feelings, opinions and attitudes of others in the group has been found to be distinguishing trait of persons chosen as leaders.

(14) Empathy : It is the ability to perceive the feeling and needs of others. According to an anonymous writer quoted by Adler

"empathise is see with to the eyes of another, to hear with the ears of another, and to feel with the heart of another".

(15) Membership Character : The leader must also be perceived by his followers as "one of us". Most studies of successful leaders reveal that the leader shares certain characteristics of the group. He is perceived as "one of us" and not as an "outsider". J.F. Brown stresses the point that "the successful leader must have membership character in the group he is attempting to lead...Membership character in the socio-psychological sense means that the individual has the pattern of attitudes and reaction tendencies of the group."

(16) Enthusiasm : Enthusiasm moves the world. As Emerson said, "Nothing great was ever achieved without enthusiasm." This applies to leadership.

(17) "Best of us" : Not only must the leader have membership character in the group, he must also be seen as incorporating to a special degree the norms and values which are central to the group.

(18) Courage and Health : In order to make decisions, a leader must have great moral courage. These decisions are frequently painful to him. A leader can and often must be severe; but he has no right to be malevolent, or cruel or vindictive. He must abhor idle gossip and control it if possible. To these may be added physical courage and health. Good health increases a leader's power, rendering it easier for him to be patient, industrious and strong willed.

(19) Sense of Duty : A leader must possess a strong sense of duty. No man is a good leader if he seeks to better his personal affairs, or puts his pleasures above his responsibilities or in his leadership of other men gives in to anger, resentment or favouritism. The role of the leader is to direct, that is to indicate the path of honour and work. "To lead is not a privilege; it is an honour and it is a trust."

(20) Patience : William Pitt said that the essential quality for a Prime Minister was patience. He was right, not only for a Prime Minister but for all those whose duty it is to lead groups of men. Another form of patience is continuity of effort. Nothing in the world is ever permanently settled. A well-kept garden will be overgrown by weeds if it is neglected for a time. "The most dangerous moment", said Napoleon comes with victory." A true leader knows that his efforts never bring lasting results and that they must be recommenced every day.

(21) Discretion : Discretion is said to be the better part of valour. Althought a brave man is better than a coward, caution is often better than reshness. Discretion is an equally necessary quality. Charles I of England lost his throne and his head because of an indiscretion; he was impudent enough to tell his queen of his plan regarding certain MPs. She told one of her trusted ladies-in-waiting what was about to happen, and the latter, having friends in the other camp lost no time in warning the threatened MPs. Thus when the moment arrived for the great coup, the king found his birds flown and the people up in arms.

(22) Intelligence : A leader must have intelligence characterised by quickness, simplicity and clarity.

Findings of Psychological Research :

Studies of personality traits of leaders show that leaders have an edge over their followers in some traits :

(1) Leaders are found to be more intelligent than their followers, but not too more intelligent than the average of the group led.

(2) Leaders are found to be more dominant than the led. This trait characterises a leader as assertive, self-confident, tough, strong willed, directive or order-giving leader.

(3) An effective leader is better adjusted than his followers. In other words he is more capable of meeting demands, both inner and outer, on his organism than he led.

(4) An effective leader is more extroverted than his followers.

(5) He is more masculine than the led.

(6) He is less conservative than the rank-and-file.

Art of leadership can be learned

Some people hold that leadership is a quality which one can have at birth or not at all. This theory is false for the art of leadership can indeed be learned.

You can be leader if you want to be. Most of the leadership traits can be acquired by diligence, perseverance and sedulous care. You can equip yourself with the right kind of powers—the powers that enable you to strike at things and get jobs done, to rise above circumstances and to pursue a steady sensible course right through the end. A psychologist rightly remarks: "On the man at the top rests a great responsibility, but if he has trained himself for the job, he will be big enough to carry it."

In acquiring the art of leadership never forget that the basic task of the leader is to *lead*. There is an anecdote that comes from the French Revolution of 1848. A big crowd was running down the street during an outbreak. The gendarmes arrested one man and tried to hold him. He cried out, "Let me go! Let me go! I have to *follow* that crowd—I'm their leader!" He ought to have cried out".. I have to *lead* that crowd—I'm their leader."

(from C.M.)

National Executive Council Meeting

ABVP - National Executive Council's Meeting is scheduled to begin from 24th May. The four day meeting will be held at Mysore (Karnataka).

All national executive members, State Presidents and Secretaries will be attending it. Resolutions on National Youth Policy (in making), National Scence and Implementation of New Education Policy are expected to come over there. Apart from these, organisational matters will be discussed.

What Education meant to Abraham Lincoln !

"HE WILL HAVE TO LEARN, I know, that all men are not just, all men are not true. But teach him also that every scoundrel there is a hero, that for every selfish politician, there is a dedicated leader.....Teach him that for every enemy there is a friend. It will take time, I know, but teach him, if you can, that a dollar earned is of far more value than five found..... Teach him to learn to lose.....and also to enjoy winning. Steer him away from envy, if you can, teach him the secret of quiet laughter. Let him learn early that the bullies are the esiest to tick.....Teach him, if you can, the wonder of books .... but also give him quiet time to ponder the eternal mystery of birds in the sky, bees in sun, and flowers on a green hillside.

"In school, teach him it is far more honourable to fail than to cheat.....Teach him to have faith in his own ideas, even if everyone tells him they are wrong..... Teach him to be gentle with gentle people, and tough with the tough. Try to give my son the strength not to follow the crowd when everyone is getting on the bandwagon. Teach him to listen to all men.....; but teach him also to filter all he hears on a screen of truth, and take on the good that comes through.

"Teach him, if you can, how to laugh when he is sad.....Teach him there is no shame in tears. Teach him to scoff at cynics and to beware of too much sweetness,.....Teach him to sell his brawn and brain to the highest bidders, but never to put a price tag on his heart and soul. Teach him to close his ears to a howling mob.....and to stand and fight if he thinks he's right.

"Treat him gently, but do not cuddle him, because only the test of fire make fine steel. Let him have the courage to be impatient....., let him have the patience to be brave. Teach him always to have sublime faith in himself, because then he will always have sublime faith in mankind. (Text of letter to a headmaster)

Nocturnal menace

The caste system of the Hindus is like an infectious disease, for each time a religious leader tried to break away from it, he ended by multiplying the number of castes. After Christianity took roots in India there were Brahmin Christians as well as Harijan Christians and, of course, they would not inter-marry and observed many of the Hindu taboos. When some were unable to shed their old were converted to Islam, they too colours and many Bohras to this day think of themselves as Brahmins.

Now it would seem that the recent Hindu fondness for organizing all-night "jagrans" and holding the entire neighbour-hood to ransom is catching on. Last week the Christian Yuva Sangathan organized a "Vishal Masihi Jagran" on Easter eve. The Sangathan claimed it was part of its effort to Indianize Christianity. While Hindu chauvinists might be pleased with the idea there are many who simply do not think that any religious group has the right to impose a sleepless night on the entire community.

The jagrans have been proliferating in the last few years and their high decibel levels have made a quiet night's sleep impossible. And to attract the "devout" quote often loud film music is thrown in as sop. Even if only a handful of people are actually participating in the "jagran" the loudspeakers are always there. Should the police allow any person to use religion to bully it into giving it a licence to have a "jagran"? Do those who do not want to be kept awake by "jagrans" have any rights?

(Courtsey - Statesman)

Another Variety of Fascism ?

No, they are not Hitlerites or Mussolini's followens. They are devout communists, whose comrade predecessors suffered in hands of Hitler. But, this did seem to prevent them (victims' successors) in adopting similar method of suppression and oppression of rival ideology and their supporters.

At least our 'comrades' in Bengal confirms this notion. Enlightened by an article on a left-wing newspapers, Communist Cadres, under the banner of 'Demoratic (sic) Youth Fedration of India' (DYFI) raided Calcutta's Globe Cinema last week and forced the management to stop exhibiting the block buster First Blood (Rombo Part-I), which was drawing unprecedented crowd. A group of DYFI activists, a frontal organisation of (al) mighty CPI (M), stormed the cinema around at 2.30 on May 2, when the noon show was on.

Was the offending film, a pronographic one? or was it showing a perverted life-style? No! It was simply a political American film showing how the Vietnam veteran one man army, Rambo, peneterated Vietnam territary and against all odds, including opposition from American bureaucracy, rescued US-POW in secret detention.

The charge, levelled by the newspaper against the film was that American Govt. and its propaganda machinery was spreading false stories about socialist Vietnam by producing films like Rambo. And such fims should be allowed in friendly India in general and over friendly West Bengal in particular. Message was clear.....Militant marshalls of ruling CPM marched on to thrash that 'American soldier Rambo.'

National Youth Policy — in making

In continuation of its 'policy-making exercise' Rajeev Gandhi's government is going to declare yet another policy. This time, the policy will be addressed to us—the youth of the country. A special youth cell was formed under the Ministry of Education, which in turn comes under Ministry of Human Resource Development. This cell has already prepared a draft-resolution. Earlier, it was planned to circulate this draft by middle of this year. But, the ministry now decided to delay the circulation of the draft.

DU admission schedule for 87-88

Central admission committee has announced the admission schedule for the session 87-88. Last date for receipt of application form for all undergraduate courses would be June 19. Admission forms are expected to be available from June 3 or 4 from respective colleges. First admission list would be notified on June 24, second on 29, third on July 3 and final list around July 9. For correspondance courses last date for receipt of application form will be Aug. 7 and last date of admission Sept. 7. This year admission for SC & ST students have been decentralised and they will have to apply directly to the colleges.

Registration for PG Courses will be between July 1 to 8 for social science & arts and list will be put up on July 13. For science last date will be July 10 and list will be put up on July 17.

Most probably DUSU election date will be Aug. 8 this year.